

GERMANICA WRATISLAVIENSIA LII 1984

Norbert Honsza
Kurt Tucholsky: szlachetny pacyfista

TREŚĆ

| | |
|---|----|
| Słowo wstępne | 3 |
| I. Nie spełnione życie | |
| Konflikt rodzinny | 5 |
| Pierwsze doświadczenia | 7 |
| Wojna światowa | 10 |
| Pseudonimy | 14 |
| Satyryk i lewicowy literat | 15 |
| „Kronikarz” Republiki Weimarskiej | 21 |
| Tucholsky a Francja | 25 |
| Jak było naprawdę? | 28 |
| Listy do Nuuny | 30 |
| Dzienniki: 1934-1935 | 35 |
| Szczęście jest czymś negatywnym | 38 |
| Tucholsky w świetle literatury | 44 |
| II. Wybór tekstów | |
| Märchen | 49 |
| Berliner Cabarets | 49 |
| Sehnsucht nach der Bakerstreet | 52 |
| Die diskreditierte Literatur | 53 |
| Was darf die Satire? | 54 |
| Die Wanzen | 56 |
| Preussische Presse | 57 |
| Politische Satire | 59 |
| Schriftsteller | 61 |
| Hepp hepp hurra! | 66 |
| Der Wagen | 69 |
| Sekretärin | 70 |
| Der Chef | 70 |
| Ruhe und Ordnung | 71 |
| Olle Germanen | 72 |
| Der Primus | 73 |
| Wie altern die -? | 75 |
| Autobiographie | 77 |
| Herr Wendriner in Paris | 78 |

| | |
|--|-----|
| Der innere Monolog | 80 |
| Mit 5 PS | 83 |
| Der Mörder und der Staat. Antwort auf eine Umfrage | 84 |
| Kriminalromane | 85 |
| Konjunktur | 86 |
| Schnipsel | 87 |
| Das Dritte Reich | 88 |
| Wo lesen wir unsere Bücher? | 90 |
| Herr Wendriner steht unter der Diktatur | 91 |
| Der andre Mann | 94 |
| So verschieden ist es im menschlichen Leben! | 95 |
| Der Mensch | 96 |
| Schnipsel | 98 |
| Kleine Nachrichten | 99 |
| Hitler und Goethe. Ein Schulaufsatz | 100 |
| Schnipsel | 103 |
| III. Literatura przedmiotu (wybór) | 105 |